Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
Volume-16, Issue-2, September-2022
www.researchguru.net

उत्तर-आधुनिकता काल में स्त्री विमर्श, प्रेम और शांति

डॉ.विवेक पाठक
सहायक प्रोफेसर (अतिथि) इतिहास विभाग राम जयपाल महाविद्यालय छपरा, बिहार
मोबाइल नंबर – 7348226897 Vivek.pathak371@gmail.com

शोध सार

सामाजिक संरचना में प्रेम-वासना का संबंध स्त्री से अक्सर जुड़ा हुआ पाया जाता है, संघर्ष का कारण भी यही बनता है। पुरुष जहाँ प्रेम को वासना के रूप में देख करके प्राप्त करने का प्रयास करता है, वही स्त्री प्रेम को गहराई के नजरिये से समझकर संबंधो को मजबूती देने का प्रयास करती है। उत्तर आधुनिकता के समय में स्त्री-पुरुष के बीच प्रेम और वासना को लेकर वर्चस्व की स्थिति अक्सर नजर आती है। प्राचीन काल का अध्ययन करे तो ज्ञात होता है की पुरुष का उत्पादन के साधन पर वर्चस्व को ले करके भी स्त्री-पुरुष के बीच संघर्ष चलता रहा है। उसी तरह कामुकता का बहस स्त्री से जुड़ा रहता है। प्रस्तुत आलेख में किस तरह प्रेम को ही अक्सर वासना का प्रतिक मान लिया जाता है, जैसे मुद्दें पर एक सार्थक अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

मूल शब्द : *उत्तर-आधुनिकता, स्त्री, प्रेम, शांति*

परिचय

उत्तर-आधुनिकता (विमर्श)

उत्तर का अर्थ 'बाद' से होता हैं। अर्थात आधुनिकता ही उत्तर आधुनिकता में रूपांतरित होती है। 'ल्योतार' ने 'द मोस्ट मार्डन' कंडीशन' नामक पुस्तक में उत्तर-आधुनिकता के दर्शन को स्पष्ट किया "उनके अनुसार इस काल के विचारकों ने न्याय का राज और समतामूलक समाज का जो सपना देखा और मानव प्रगति की जो आशा बंधी थी, दो विश्व युद्धों ने उसे खंडित कर दिया। जिससे ज्ञान और लोकतंत्र से जुडी अपेक्षाएं अधूरी रह गई।"[i]मिशेल फोकाल्ट ने उत्तर-आधुनिकता के प्रमुख लक्ष्यों की पहचान की है,"जिसमे तर्क, सत्य या ज्ञान शामिल है।"[ii]इस प्रकार उत्तर-आधुनिकता को तर्क के कसौटी पर देखा जाता है। स्त्री –विमर्श से जुड़े ज्यादातर प्रश्न तर्क की कसौटी पर यदि नही देखे जाएगे तो,उत्तर-आधुनिकता का कोई अर्थ भी नहीं रह जाता है। शब्दों के जाल तथा सामाजिक संरचना के व्यूह को समझे बिना सामाजिक संबंधों के तत्व को भी नही समझा जा सकता है। जैसा की "आर्नोल्ड टायनबी" ने आधुनिकता के समाप्ति की घोषणा करते हुए उत्तर-आधुनिकता को उसके बाद की स्थिति मानते है। उनके अनुसार आधुनिकता के बाद उत्तर-आधुनिकता तब शुरू होती है,जब लोग कई अर्थों में अपने जीवन, विचार एवं भावनाओं में तर्क को त्याग करके अतार्किक और असंगतियों को अपना लेते है।"[iii]

इसलिए उत्तर-आधुनिकता के दर्शन ने प्रश्नवाचक तथा शून्यवाद को भी अपनाया है।"[iv]इस प्रकार उत्तर-आधुनिकता मात्र तर्क और केवल वैचारिक निर्माण है। जो सभी के लिए सार्वभौमिक रूप से मान्य नहीं है, यह एक प्रकार से विमर्श की प्रक्रिया के बाद वाद-प्रतिवाद की संलयन की प्रक्रिया को दोहराता है।"1980 के बाद उत्तर-आधुनिकता को एक सांस्कृतिक वर्चस्व के रूप में व्यवस्था के सभी रूपों में देखा जाने लगा। जिसमे तार्किकता और आर्थिक शामिल है"।[v]

उत्तर-आधुनिकता बनाम स्त्री-विमर्श

समय के साथ परिवर्तन का होना स्वभाविक है। लेकिन यही परिवर्तन संघर्ष और वर्चस्व को भी बढाता है।"आधुनिक से उत्तर-आधुनिकता के दौर में स्त्री के लिए हर रोज़ एक नई समस्या नए रूप में सामने आ रही है। स्त्री-स्वाधीनता का अर्थ है'स्त्री-पुरुष के जिस पारंपरिक संबंधों को निभा रही है,उससे मुक्त हो। संबंधो की पारस्परिकता, आर्थिक, प्रेम और आनंद-प्रमोद में जब कोई भेद नहीं रह जाएगा। तो स्त्री का अपना स्वतंत्र अस्तित्व होगा"।[vi]एक उत्तर-आधुनिकतावादी नारीवादी की अवधारणा के संदर्भ में कुछ विरोधाभास है,इसलिए नारीवादी एक राजनीति है तो वही उत्तर-आधुनिकता इसके सिद्धांतों का समर्थन करता है। लेकिन राजनीति प्रतिद्धता में असमर्थता व्यक्त करता है। नारीवादी विमर्श के केंद्र में पुरुष वर्चस्व को रखा जाता है जबकि उत्तर-आधुनिकता नारीवादी विमर्श में पुरुष वर्चस्व को केंद्र में रखा गया है। जबकि उत्तर-आधुनिकता नारीवादी विमर्श में वर्चस्व को ही नकारता है। उत्तर-आधुनिकता परिवर्तन के समर्थन में नहीं बल्कि नारी विमर्श का प्रतिनिधितव मतभेदों से करता है"।[vii]

मतभेदों का तात्पर्य विचारों की अवधारणा से है जो स्त्री विमर्श के केंद्र में घुमती रहती है। हर वर्ग अपनी तरह विचारों की अवधारणा के अनुसार सिद्धांतों का प्रतिपादन करता रहता है। जाँक देरिदा ने इसे स्पष्ट करते हुए कहा की "यह उसी तरह है जैसे पश्चिम दर्शन द्विधारी विरोध अपर टिकी है जैसे सत्य-असत्य,एकता-विविधिता या पागल महिला।"[viii]

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है की विचारधाराओं में असमानता ही स्त्री विमर्श और उत्तर-आधुनिकता का केन्द्रित बिंदु है जो विमर्श की प्रक्रिया में वाद-प्रतिवाद की तरफ ले जाता है।

स्त्री, प्रेम और शांति

प्रेम करने से पहले प्रेम के अर्थ को समझना बहुत जरूरी होता है। अक्सर लोग प्रेम, प्यार, रोमांस और कामवासना को एक ही समझ लेते है।"प्रेम एक तरहं की भावनाएं,अवस्थाएं और तथ्य दृष्टिकोण है,जो पारस्परिक स्नेह से लेकर आनंद तक"[ix]"और प्रेम तीन घटकों से बना है जूनून, प्रतिबधता और अतरंगता"[x]। प्रेम एक विस्तृत रूप है। प्रेम एक दिल के समान होता है। जो प्यार, रोमांस और कामवासना को गति प्रदान

करता है। प्रेम आध्यात्मिक और कामवासना भी हो सकता है। प्रेम से आध्यात्मिकता और भौतिकता को अलग नही किया जा सकता है। लोग प्रेम को बंधन मान लेते है। लेकिन सच्चाई यह है की प्यार, रोमांस और कामवासना बंधन हो सकता है लेकिन प्रेम नही।"*मेरे देखे मुक्ति शायद ही कोई देखना चाहता है, लोग बंधन चाहते है। प्रेम कोई गुण नही है। कोई प्रेम करने का अभिमान न करे।"प्रेम मे सरलता और स्वतन्त्रता को स्वीकार किया जाता है। प्रेम एक सांस की तरह है जो स्वेच्छा से ही ग्रहण किया जा सकता है। क्योकि प्रेम को उन्नत होने के लिए किसी की आवश्यकता नही होती।"प्रेम तो उस हृदय को उन्न्त कर देगा। जिसे वह योग्य समझता है। प्रेम के बदले कोई पुरस्कार मत मागों। प्रेम ही प्रेम का पुरस्कार है"*[xi]।

स्वत:होने वाली प्रक्रिया एवं स्वेच्छा से स्वीकार होने वाली कसौटी ही प्रेम के निर्माण का पहला सोपान होता है। *प्रेम के अर्थ को समझाते"तुम एक कमरे मे दो दीए जलाओं। तो दो दीए अलग – अलग होगे है, लेकिन दोनों दीए का प्रकाश मिल जाएगा। पर दीए नही मिल सकते है। तुम दीए को कितना भी साथ मिलाओं - जुलाओं दीए नही मिल सकते है। मिलन केवल प्रकाश का प्रकाश होता है"*। अक्सर लोग यही मान के चलते है की शरीर का मिलन प्रेम की अंतिम निशानी है। जबकि यह प्रेम की तुलना मे कामवासना की निशानी होती है। कामवासना तो बाद की प्रक्रिया है प्रेम तो पहली सीढ़ी होती है। मन वही भटक जाता है। जहाँ कामवासना के विचारों कि प्रक्रिया शुरू हों जाती है। प्रेम का वास्तविक रूप ही नष्ट हो जाता है। इसलिए कहा जाता है कि *"बिना एक शब्द बोले अगर प्रेम को प्रकट कर सकते है। तो जितना हो सके कम बोले, मौन सर्वोत्तम उपाय है, प्रेम के लिए। जहा मौन है वही करुणा होगी, जहा करुणा होगी, वही ध्यान भी होगा। अर्थात करुणा ही प्रेम कि कसौटी है"*।[xii]प्रेम को आध्यात्मिक मानते हुए प्रेम को सत्य का रूप कहते है। जिस प्रकार व्यक्ति सत्य को ग्रहण करने के बाद ऊर्जावान हो जाता है। उसी प्रेम को ग्रहण करने के बाद व्यक्ति खिल जाता है। जबकि घृणा व्यक्ति को मार जाती है। घृणा एक जहर है, जबकि प्रेम मे एक अमृत है।[xiii]

प्रेम को आध्यात्मिक के साथ -साथ सत्य के रूप मे देखते है, न कि क्षणिक कामवासना के रूप मे। प्रेम तब तक प्रेम है जब कहा न हो। प्रेम अनकहा ही होता है। प्रेम का दिखावा या कहने कि कोशिस करे तो वासना उतर आती है, संबंधो मे। प्रेम का अर्थ दूसरे कि आँखों मे देखना है, दूसरा कोई उपाय नही है। जब किसी कि आंख़े तुम्हारे लिए आतुरता से भरती है। तब तुम्हें पहली बार प्रेम के अर्थ का बोध होगा। जब तुम किसी के हृदय मे झाक कर जब तक नही देखोगे तब तक प्रेम के मूल्य का सही ज्ञान नही मिल पायेगा। ज़्यादातर लोग प्रेम करते समय प्रेम के भाव को मौका नही देते

है और बुद्धि को बीच मे लाने लगते है। क्योंकी बुद्धि को जहाँ भी कुछ प्यारा लगता उसको तोड़ना चाहती है। इसलिय प्रेम मे बुद्धि हिंसात्मक का कार्य करती है। प्रेम कोई शब्द नही है, कोई घटना नही है। प्रेम दिखता भी नही और ना ही कहा जाता। सिर्फ प्रेम कोई महसूस किया जाता है। ऐसा आनंद मिलता जिसका वर्णन नही किया जा सकता है,पर शर्त यह है कि प्रेम बेशर्त हों।

"जिस दिन आप को प्रेम मे ही रस का पता चल जाएगा। उस दिन आप जो भी है, जहा भी है। उसको ही प्रेम करेगे"।[xiv]

निष्कर्ष

लेकिन हम कैसे भूल सकते है की मन तो चंचल होता है, मन सदा आगे ही चलता रहता है। चाहे प्रेम हो या वासना। वह किसी न किसी पर रुकेगा ही। जिस छड़ वासना मिलेगी, वासना व्यर्थ हो जाएगी। अब सवाल यह है की जहा प्रेम होगा तो वासना भी होगा। लेकिन वासना तो कामुकता से ही आती है जो प्रेम का ही दूसरा पहलू है। जो पुरुष को आकर्षित करती है। महत्वपूर्ण बात यह है की यदि प्रेम स्थिर है तो एक सीमा के बाद विदा हो सकती है। लेकिन स्त्री के प्रति आकर्षण विदा नही हो सकता है। तो फिर वासना कैसे जा सकती है? जवाब है की वासना सिर्फ परिवर्तित हो सकती है, जा नही सकती। जिसे हम प्रेम कहते है वह वासना का दूसरा रूप है। वासना का चरम अवस्था ही प्रेम है। यदि को चाहता है की काम का भाव बिल्कुल पैदा ही न हो तो प्रेम का अस्तित्व भी संभव नही है। इसी प्रकार प्रेम को प्यार से भी अलग नही किया जा सकता है। यदि प्रेम से घृणा को कम किया जा सकता है,तो प्यार सबसे अधिक उपचार करने वाला बल है। इस प्रकार हम कह सकते है प्रेम हो या प्यार या कामवासना सबका मूल केंद्र मे शांति की स्थापना ही करना होता है।

सदर्भ

---

[i]इग्नू,आधुनिकता तथा उत्तर-आधुनिकता,इकाई 13,पृ.154

[ii]हाइक,आर.सी.स्टेफन,2011,एक्सप्लानिंग पोस्टमार्डननिज्म : स्केपटिजिम एंड सोशोलिजिन्म फ्रॉम रूसो टू रूजवेल्ट.पृ.2

[iii]टायनबी,अर्नाल्ड.1924, ए स्टडी ऑफ़ हिस्ट्री,भाग-एक,पृ.1

[iv]इलाती,एन.अब्दुल्लाजिम,जून, 2016, पोस्टमार्डननिज्म थ्योरी.पृ.1

[v]इन्सैक्लोपिडिया ऑफ़ पोस्टमार्डननिज्म,2001,एडिट –ई,टायनोर एंड चारराइज .इ.विनाविस्ट.पृ.19

[vi]कुमारी,प्रियंका,2018,स्त्री-उत्तर-आधुनिकता,भूमंडलीकरण और बाजारवाद,साहित्य कुन्ज

[vii]रोश्नेसल,शासा,पोस्ट मार्डन फेमनिस्ट पॉलिटिक्स,पृ.162-163

[viii]पार्पर्ट,एल.जेन.(1993).हूँ इज द 'अदर'? ए पोस्टमार्डननिज्म फेमनिस्ट क्रिटिक ऑफ़ वोमेन एंड डेवपलमेंट थ्योरी एंड प्रेक्टिस.पृ.440

[ix]च्लोल्सका,सारा,(2014).व्हाट इज लव,पृ.1

[x]ट्रेगेर,स्तानिस्लाव,(2013).लव,पृ.2

[xi]किताबे – ए – मीरदार

[xii] सहज योग - प्रवचन – 15

[xiii]अष्ट्रावक, महागीता

[xiv]गीता दर्शन – भाग – 6, प्रवचन – 146